



Research Article

प्राचीन भारत में माप-तौल प्रणाली का संस्थागतकरण: मौर्यकालीन केंद्रीकरण से गुप्त-हर्ष कालीन सामंती विकेंद्रीकरण तक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रियंका ^{1*}, डॉ. नीलम रानी ²

¹ पीएचडी शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

² इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: * प्रियंका

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20642843>

सारांश

प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास में माप-तौल प्रणाली (Metrology) केवल वाणिज्यिक विनिमय का उपकरण नहीं, बल्कि राज्य की प्रशासनिक गहराई और राजनैतिक दर्शन का प्रतिबिंब रही है। प्रस्तुत शोध पत्र मौर्यकाल से लेकर हर्षवर्धन काल (लगभग चौथी शताब्दी ई.पू. से आठवीं शताब्दी ई.स्वी. तक) के मध्य मापन प्रणाली के संस्थागतकरण (Institutionalization) और उसमें आए संरचनात्मक परिवर्तनों का एक तुलनात्मक व विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। मौर्य साम्राज्य ने जहाँ 'पौतवाध्यक्ष' जैसी संस्था के माध्यम से माप-तौल पर एक अभूतपूर्व राजकीय एवं केंद्रीकृत नियंत्रण स्थापित किया, वहीं गुप्त और उत्तर-गुप्त काल तक आते-आते सामंतवाद (Feudalism) के उदय और भूमि अनुदानों की प्रचुरता ने इस व्यवस्था को 'क्षेत्रीयकरण' और विकेंद्रीकरण की ओर धकेला। यह शोध पत्र साहित्यिक (अर्थशास्त्र, अमरकोश, स्मृतियाँ) और पुरातात्विक (ताम्रपत्र, बाट, मुद्राएँ) साक्ष्यों के आधार पर यह प्रतिपादित करता है कि राजनैतिक सत्ता के स्वरूप में आए परिवर्तनों ने सीधे तौर पर मापन के मानकों और राजस्व संग्रह की पद्धतियों को प्रभावित किया।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 05-05-2026
- Accepted: 06-06-2026
- Published: 11-06-2026
- IJCRM:5(3); 2026: 759-761
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

प्रियंका, डॉ. नीलम रानी. प्राचीन भारत में माप-तौल प्रणाली का संस्थागतकरण: मौर्यकालीन केंद्रीकरण से गुप्त-हर्ष कालीन सामंती विकेंद्रीकरण तक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):759-761.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: पौतवाध्यक्ष, कुल्यावाप, सामंतवाद, विकेंद्रीकरण, मौर्यिकरण, प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना

किसी भी प्राचीन सभ्यता की आर्थिक स्थिरता और उसके राजनैतिक नियंत्रण की सीमा इस बात से मापी जा सकती है कि उसका विनिमय और मापन ढांचा कितना संस्थागत था। प्राचीन भारत में माप-तौल का इतिहास क्रमिक अनुकूलन और नवाचार की गाथा है। मौर्य साम्राज्य की स्थापना ने भारतीय उपमहाद्वीप को पहली बार एक सुदृढ़ राजनैतिक और आर्थिक सूत्र में पिरोया। मौर्यों ने राजस्व की हानि को रोकने और साम्राज्यव्यापी व्यापारिक एकरूपता बनाए रखने के लिए मापन का पूर्ण राजकीयकरण किया।

किंतु, गुप्त काल और उसके पश्चात हर्षवर्धन के काल तक आते-आते भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था का परिदृश्य पूरी तरह बदल गया। पूर्व मध्यकाल की ओर बढ़ते हुए समाज में विकेंद्रीकरण की प्रवृत्तियां बलवती हुईं, जिसे इतिहासकारों ने 'सामंती मॉडल' (Feudal Model) के रूप में व्याख्यायित किया है। इस राजनैतिक रूपांतरण का सीधा प्रभाव माप-तौल प्रणालियों पर पड़ा। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि कैसे मापन की इकाइयाँ 'राजकीय सत्ता के केंद्रीकरण' से फिसलकर 'स्थानीय सामंती स्वायत्तता' के जाल में समाती चली गईं।

• मौर्यकालीन केंद्रीकरण और 'पौतवाध्यक्ष' का वैधानिक ढांचा कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' मौर्यकालीन आर्थिक नियंत्रण का सबसे जीवंत दस्तावेज है। मौर्य प्रशासन में माप-तौल का नियमन कोई अनौपचारिक कार्य नहीं था, बल्कि यह एक पूर्णतः संस्थागत विभाग था।

पौतवाध्यक्ष की भूमिका और उत्तरदायित्व

कौटिल्य ने आर्थिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए 'पौतवाध्यक्ष' (Superintendent of Weights and Measures) नामक एक उच्चाधिकारी की नियुक्ति का विधान किया। पौतवाध्यक्ष का कार्य अत्यंत व्यापक था:

मानकीकरण (Standardization): साम्राज्य में केवल वही बाट और पैमाने वैध माने जाते थे जो राजकीय टकसाल या पौतवाध्यक्ष के कारखाने में निर्मित होते थे और जिन पर राजकीय मुहर (Stamp) अंकित होती थी।

त्रैमासिक पुनरीक्षण: अर्थशास्त्र के अनुसार, प्रत्येक चार महीने में व्यापारियों के बाटों की जांच अनिवार्य थी। इस जांच के लिए व्यापारियों से एक निश्चित शुल्क ('प्रतिवेधियम') लिया जाता था।

अंतःपुर मान बनाम व्यावहारिक मान: राजकीय लाभ का गणित

कौटिल्य की कूटनीति और आर्थिक चातुर्य का प्रमाण इस बात से मिलता है कि मौर्यकाल में दो प्रकार के माप मानक प्रचलित थे:

1. अन्तःपुर मान (Ayamana): इसका प्रयोग राजकीय भंडारगृहों में राजस्व या कर के रूप में आने वाले अनाज और वस्तुओं को स्वीकार करने के लिए किया जाता था। यह मानक आकार में थोड़ा बड़ा होता था।
2. व्यावहारिक मान (Vyavaharika): इसका प्रयोग सामान्य बाजार में जनता के बीच व्यापार के लिए होता था। यह मानक अन्तःपुर मान से लगभग 5% छोटा होता था।

इस द्वैध पद्धति के माध्यम से मौर्य राज्य बिना कर की दरें बढ़ाए वैधानिक रूप से अतिरिक्त राजस्व (अधिशेष) प्राप्त कर लेता था, जो पूर्ण केंद्रीकरण का अकादमिक साक्ष्य है।

दंड विधान और उपभोक्ता संरक्षण

मौर्यकाल में मापन की शुद्धता सीधे सामाजिक न्याय से जुड़ी थी। यदि कोई व्यापारी निर्धारित मानक से कम तौलता था, तो उस पर 'सहास' (कठोर आर्थिक दंड) लगाया जाता था। कम तौलने की मात्रा के अनुपात में कोड़े मारने तक शारीरिक दंड का भी प्रावधान था।

मौर्योत्तर काल (शक-कुषाण व सातवाहन): संक्रमण और श्रेणी स्वायत्तता

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद केंद्रीय नियंत्रण शिथिल हुआ, किंतु व्यापार का वैश्वीकरण हुआ। इस काल में राजकीय केंद्रीकरण का स्थान *श्रेणी स्वायत्तता* (Guild Autonomy) *ने ले लिया।

• रेशम मार्ग और रोमन व्यापार का प्रभाव

कुषाणों ने जब उत्तर-पश्चिम भारत और रेशम मार्ग पर नियंत्रण किया, तो भारतीय माप-विज्ञान को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ा। कुषाण राजाओं ने रोमन 'ऑरियस' के भार मानक (124 ग्रेन) के समकक्ष अपनी स्वर्ण मुद्राएं जारी कीं। इस युग में तौल की सूक्ष्मता अत्यधिक बढ़ गई क्योंकि मसालों, रेशम और कीमती रत्नों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए रत्ती (गुंजा) आधारित प्रणालियों को और अधिक वैज्ञानिक बनाया गया।

श्रेणियों का संस्थागत उद्भव

इस काल में राज्य ने स्वयं बाजार को विनियमित करने के बजाय यह कार्य व्यापारिक संगठनों (श्रेणियों) को सौंप दिया। नासिक और जुन्नार के सातवाहन अभिलेख सिद्ध करते हैं कि श्रेणियों की अपनी मुहरें होती थीं जो बाटों की शुद्धता को प्रमाणित करती थीं। राज्य इन श्रेणियों के 'श्रेणी-धर्म' (नियमों) को वैधानिक मान्यता देता था।

गुप्त से हर्षवर्धन काल: सामंती विकेंद्रीकरण और भूमि मापन का रूपांतरण

चौथी शताब्दी ईस्वी से भारतीय इतिहास एक नए प्रतिमान में प्रवेश करता है, जहाँ व्यापारिक मौद्रिककरण का स्थान भूमि-आधारित सामंती अर्थव्यवस्था ले लेती है।

'वाप' पद्धति और बीज-क्षमता आधारित पैमाइश

गुप्त काल के बंगाल (पुंड्रवर्धन) से प्राप्त दामोदरपुर और धनदह ताम्रपत्रों में भूमि मापन की एक अत्यंत विशिष्ट और नवीन संस्थागत प्रणाली दिखाई देती है। यहाँ भूमि को 'गज' या 'हाथ' से मापने के बजाय *'वाप'* (बोने की क्षमता) के आधार पर मापा जाने लगा:

कुल्यावाप (Kulyavapa): वह भू-भाग जिस पर एक 'कुल्या' (अनाज का एक बड़ा बोरा, लगभग 80-128 पाउंड) बीज बोया जा सके।

द्रोणवाप (Dronavapa): वह भू-भाग जिस पर एक 'द्रोण' भार का बीज बोया जा सके ($1 \text{ कल्यावाप} = 8 \text{ द्रोणवाप}$)।

यह पद्धति दर्शाती है कि विकेंद्रीकृत काल में राजस्व का निर्धारण केवल भूमि के आकार पर नहीं, बल्कि उसकी उपजाऊ शक्ति (Productivity) के आधार पर होता था।

सामंतवाद का उदय और मापन का क्षेत्रीयकरण

हर्षवर्धन के काल (६०६-६४७ ई.) तक आते-आते राजा द्वारा अपने अधिकारियों, सामंतों और धार्मिक संस्थानों (ब्राह्मणों और बौद्ध विहारों) को बड़े पैमाने पर कर-मुक्त भूमि (अग्रहार) दान देने की प्रथा पराकाष्ठा पर पहुँच गई।

इसके परिणामस्वरूप मापन प्रणाली में निम्नलिखित संस्थागत परिवर्तन आए:

केंद्रीय नियंत्रण का अंत: जब भूमि के साथ-साथ प्रशासनिक और दंडात्मक अधिकार भी सामंतों को सौंप दिए गए, तो सामंतों ने अपने-अपने क्षेत्रों में स्वयं के माप दंड (जैसे स्थानीय 'नल' या बांस के डंडे) स्थापित कर लिए।

क्षेत्रीय भिन्नता (Regional Variations): एक ही नाम की इकाई (जैसे 'हस्त' या 'दण्ड') की लंबाई अलग-अलग सामंतों के राज्यों में भिन्न होने लगी। बाणभट्ट के 'हर्षचरित' में सेना के कूच के समय स्थानीय स्तर पर रसद मापने की विभिन्न प्रणालियों के टकराव का अप्रत्यक्ष संकेत मिलता है।

तुलनात्मक विश्लेषण: केंद्रीकरण बनाम विकेंद्रीकरण

मौर्यकालीन और गुप्त-हर्ष कालीन मापन प्रणालियों का यह तुलनात्मक ढांचा राजनैतिक सत्ता के विकेंद्रीकरण के आर्थिक प्रभावों को स्पष्ट करता है:

विश्लेषणात्मक बिंदु	मौर्य काल (केंद्रीकृत मॉडल)	गुप्त-हर्ष काल (सामंती विकेंद्रीकृत मॉडल)
सर्वोच्च नियामक	केंद्रीय अधिकारी (पौतवाध्यक्ष)	स्थानीय सामंत, अग्रहार भोगी और धार्मिक मठ
मानकों की प्रकृति	संपूर्ण साम्राज्य में एकसमान और वैधानिक	क्षेत्रीय और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील
मुख्य मापन क्षेत्र	वाणिज्य, पण्य वस्तुएं और बाजार नियंत्रण	कृषि भूमि की उत्पादकता और अनाज भंडारण
विनिमय का माध्यम	उच्च मौद्रिकरण (चांदी के मानकीकृत 'पण' सिक्के)	आंशिक मौद्रिकरण (कौड़ियों का प्रचलन, वस्तु-विनिमय का पुनरुत्थान)
साहित्यिक साक्ष्य	कौटिल्य का अर्थशास्त्र (प्रशासनिक संहिता)	अमरकोश (वर्गीकरण), स्मृतियाँ (सामंती नियम)

यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि जैसे-जैसे राज्य का स्वरूप केंद्रीय नियंत्रण से सामंती आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा, माप-तौल की इकाइयाँ भी 'सार्वभौमिक' (Universal) से 'स्थानीय' (Localized) होती चली गईं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषणात्मक अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था में माप-तौल प्रणाली का संस्थागतकरण तत्कालीन राजनैतिक शक्ति के संतुलन के साथ समानांतर रूप से चलता था। मौर्यकाल का 'पौतवाध्यक्ष' मॉडल यह सिद्ध करता है कि एक सुदृढ़ केंद्रीय सत्ता मापन उपकरणों को पूर्णतः अपने अधीन रखकर आंतरिक व्यापार का दोहन और उपभोक्ता संरक्षण दोनों एक साथ कर सकती थी। इसके विपरीत, गुप्त और हर्षवर्धन काल का

सामंती ढांचा यह दर्शाता है कि राजनैतिक विकेंद्रीकरण अपरिहार्य रूप से आर्थिक और मापन प्रणालियों के क्षेत्रीयकरण को जन्म देता है। 'कुल्यावाप' जैसी पद्धतियों ने यद्यपि कृषि राजस्व को अधिक व्यावहारिक बनाया, किंतु इसने मौर्यकालीन सार्वभौमिक एकरूपता को समाप्त कर दिया। अतः, प्राचीन भारत का माप-विज्ञान केवल गणितीय प्रगति की कहानी नहीं है, बल्कि यह राजनैतिक सत्ता के उतार-चढ़ाव और सामंती प्रवृत्तियों के उद्भव का एक विश्वसनीय आर्थिक संकेतक है।

संदर्भ सूची

1. अल्लेकर एस. *द कॉइनेज ऑफ द गुप्ता एम्पायर*. बनारस: बीएचयू प्रेस; 1957.
2. अमरसिंह. *अमरकोश*. हरगोविंद शास्त्री, अनुवादक. वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत संस्थान; 2001.
3. कांगले आरपी, संपादक. *कौटिल्य अर्थशास्त्र*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 2010.
4. झा डीएन. *प्राचीन भारत: एक ऐतिहासिक रूपरेखा*. नई दिल्ली: मनोहर पब्लिकेशन्स; 2004.
5. बाणभट्ट. *हर्षचरित*. पीवी काणे, अनुवादक. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 1986.
6. शर्मा आरएस. *पूर्व मध्यकालीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2015.
7. सिंह उपेंद्र. *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: पीयरसन एजुकेशन; 2016.
8. सरकार डीसी. *सेलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स बियरिंग ऑन इंडियन हिस्ट्री एंड सिविलाइजेशन*. कलकत्ता: कलकत्ता यूनिवर्सिटी; 1965.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

About the author



प्रियंका बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा के इतिहास विभाग में पीएचडी शोधार्थी हैं। उनकी शोध रुचि भारतीय इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन तथा ऐतिहासिक विमर्शों के विश्लेषण में है। वे इतिहास के विभिन्न आयामों पर अध्ययन एवं अनुसंधान कार्यों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।